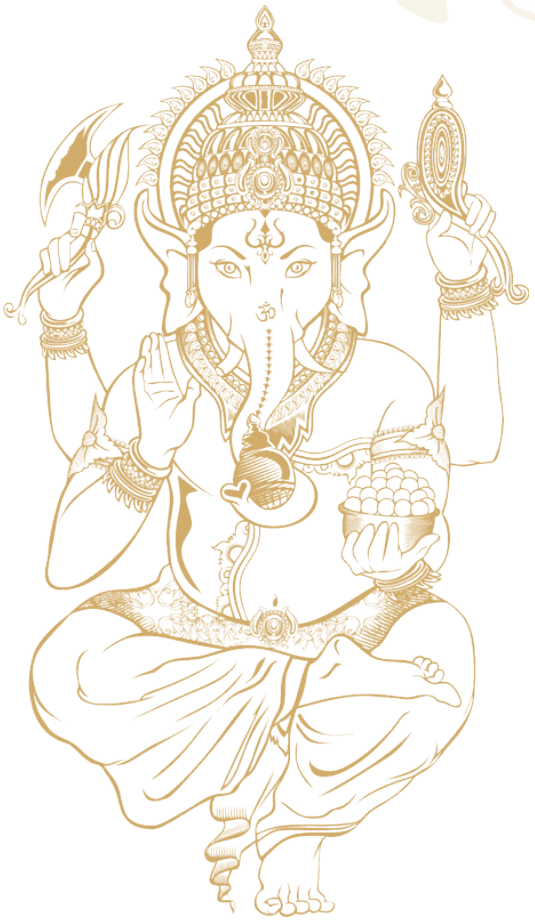

Yash

Ritika

Model: Web-FreeMatching

Order No: 121464011

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
07/07/1998	जन्म तिथि	24/03/1992
मंगलवार	दिन	मंगलवार
घंटे 15:29:00	जन्म समय	14:20:00 घंटे
घटी 24:46:54	जन्म समय(घटी)	19:51:30 घटी
India	देश	India
Alwar	स्थान	Alwar
27:32:00 उत्तर	अक्षांश	27:32:00 उत्तर
76:35:00 पूर्व	रेखांश	76:35:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:23:40	स्थानिक संस्कार	-00:23:40 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
05:34:14	सूर्योदय	06:23:24
19:22:33	सूर्यास्त	18:36:53
23:50:03	चित्रपक्षीय अयनांश	23:45:12

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
बुध 7वर्ष 5मा 5दि		29:53:09	तुला	लग्न	कर्क	14:48:36	बुध 11वर्ष 8मा 26दि	
शुक्र		21:15:51	मिथु	सूर्य	मीन	10:12:58	शुक्र	
11/12/2012		24:10:17	वृश्चि	चंद्र	वृश्चि	20:47:32	20/12/2010	
11/12/2032		06:52:11	मिथु	मंगल	कुंभ	03:21:53	20/12/2030	
शुक्र	12/04/2016	15:48:29	कर्क	बुध व	मीन	14:18:52	शुक्र	20/04/2014
सूर्य	12/04/2017	04:02:28	मीन	गुरु व	सिंह	12:57:14	सूर्य	21/04/2015
चन्द्र	12/12/2018	21:30:46	वृष	शुक्र	कुंभ	19:02:58	चन्द्र	19/12/2016
मंगल	11/02/2020	08:29:07	मेष	शनि	मक	21:29:45	मंगल	18/02/2018
राहु	11/02/2023	08:39:08	सिंह व	राहु व	धनु	11:29:08	राहु	18/02/2021
गुरु	12/10/2025	08:39:08	कुंभ व	केतु व	मिथु	11:29:08	गुरु	20/10/2023
शनि	11/12/2028	17:57:11	मक व	हर्ष	धनु	23:55:05	शनि	20/12/2026
बुध	12/10/2031	07:22:31	मक व	नेप	धनु	25:00:10	बुध	20/10/2029
केतु	11/12/2032	11:52:15	वृश्चि व	प्लूटो व	तुला	28:58:23	केतु	20/12/2030

लग्न-चलित

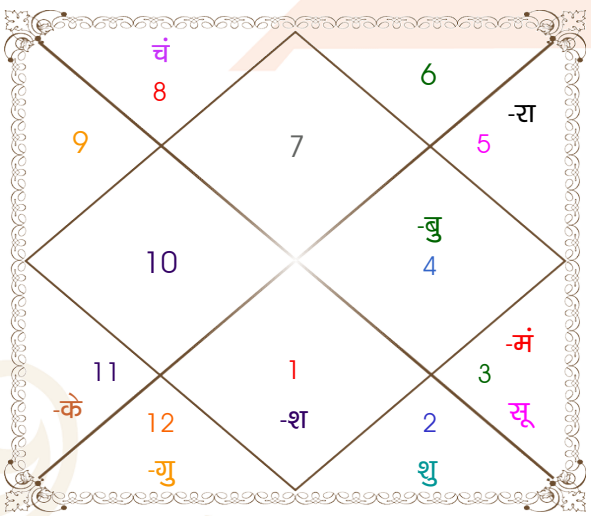

लग्न-चलित

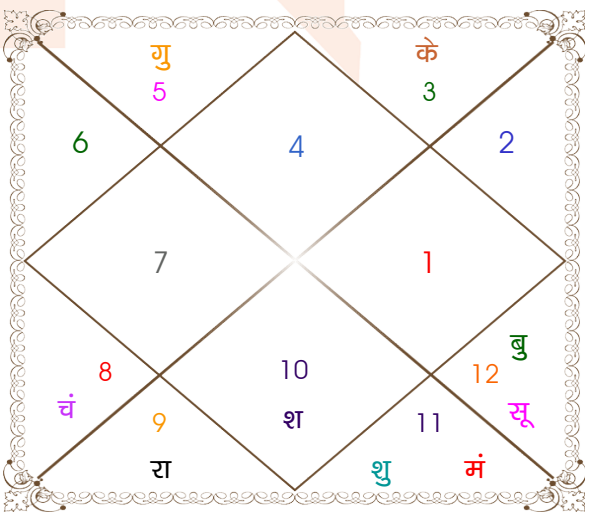

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	विप्र	विप्र	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	कीटक	कीटक	2	2.00	--	स्वभाव
तारा	जन्म	जन्म	3	3.00	--	भाग्य
योनि	मृग	मृग	4	4.00	--	यौन विचार
मैत्री	मंगल	मंगल	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	राक्षस	राक्षस	6	6.00	--	सामाजिकता
भकूट	वृश्चिक	वृश्चिक	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	आद्य	आद्य	8	0.00	हाँ	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	28.00		

लैं का वर्ग मृग है तथा त्पजपां का वर्ग मृग है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार लैं और त्पजपां का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

लैं मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में नवम् भाव में स्थित है।

त्पजपां मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में अष्टम् भाव में स्थित है।

अजे लग्ने व्यये चापे पाताले वृश्चिके स्थिते।
वृषे जाये घटे रन्ध्रे भौम दोषो न विद्यते।।

अर्थात् मेष राशि लग्न में, द्वादश में धनुराशि, चतुर्थ में वृश्चिक राशि, सप्तम में वृष राशि तथा अष्टम में कुम्भ राशि में मंगल स्थित हो तो मंगल दोष नहीं होता है।

क्योंकि मंगल त्पजपां कि कुण्डली में अष्टम् भाव में कुम्भ राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि राहु लैं कि कुण्डली में एकादश भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

लैं तथा त्पजपां में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।